SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

रामानुज के अनुसार आत्मा का स्वरूप

मंजू सिंह ठाकुर, Ph.D., योग विभाग
अग्रसेन महाविद्यालय, पुरानी बस्ती, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
मंजू सिंह ठाकुर, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/06/2023
Revised on : -----
Accepted on : 28/06/2023
Plagiarism : 00% on 22/06/2023

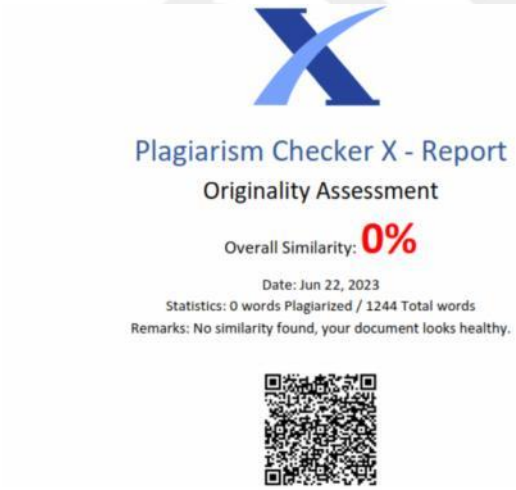

शोध सार

रामानुज के अनुसार आत्मा ही ज्ञान का आधार है। ज्ञान ही आत्मा का स्वरूप है, आत्मा स्वभाव से ही चित् रूप में विद्यमान है। हमारे शरीर से जुड़े होने के कारण आत्मा समस्त कर्मों को करता है जिसके अनुसार अच्छे बुरे फलों को प्राप्त करता है। रामानुज के अनुसार आत्मा नित्य है, जबकि शरीर, इंद्रियां आदि सभी अनित्य है। रामानुज के अनुसार आत्मा इस जगत के सभी प्राणियों में विद्यमान है इसलिए हम आत्मा को अनेक मानते हैं। रामानुज के अनुसार आत्मा ही जीवात्मा है साधारणतः मनुष्य आत्म तत्व को समझने में असमर्थ है। भ्रांति वश मनुष्य मन बुद्धि और इंद्रियों को ही सब कुछ मान लेता है किंतु जब मनुष्य अंतर्मुखी होता है, तब वह परमात्मा की कृपा से आत्मदर्शन कर पाता है।

मुख्य शब्द

रामानुज, आत्मा, ज्ञान, इंद्रियां.

रामानुज के अनुसार चित तत्व जीवात्मा है। यह दुसरा तत्व है, यह नित्य चेतन द्रव्य है। ज्ञान ही इसका स्वरूप् है अतः इसे ज्ञाता कहते हैं। प्रश्न यह है कि ज्ञान और आत्मा में संबंध क्या है? शंकर के अनुसार चैतन्य या ज्ञान ही आत्मा है, दोनों में अभेद है।

रामानुज के अनुसार चैतन्य और आत्मा में गुण और गुणी, धर्म और धर्मी का सम्बन्ध है। आत्मा ही ज्ञान का आश्रय है। रामानुज के अनुसार ज्ञान ही आत्मा का स्वरूप है, अतः आत्मा स्वभाव से ही चित रूप है। आत्मा ज्ञाता है। ज्ञाता के अतिरिक्त यह कर्ता और भोक्ता भी है। शरीर से संबंध होने के कारण आत्मा कर्म करता है, तथा अच्छे बुरे फल को प्राप्त करता है, अतः कर्ता और भोक्ता भी है। परन्तु ज्ञाता होना आत्मा का निजी स्वभाव है, कर्ता और भोक्ता नहीं। जब ईश्वर की कृपा से जीवात्मा का शरीर और संसार से संबंध छूट जाता है तो आत्मा

अपने ज्ञान स्वरूप् में ही स्थित रहता है।

रामानुजाचार्य के अनुसार जीवात्मा "अहं" या "मैं" शब्द से वाच्य है। 'मैं' चैतन्य रूप है। यह सभी प्रकार की चेतन अवस्थाओं में विद्यमान रहता है। उदाहरण "मैं" जागता हूँ", "मैं सोता हूँ" आदि विभिन्न अवस्था में "मै" का प्रयोग है। इससे सि़द्ध होता है कि "अहं" चेतन क्रियाओं का आश्रय है। यही जीवात्मा की वाच्यार्थ है। यह जीवात्मा शरीर, इन्द्रिय, मन, प्राण, और बुद्धि आदि से भिन्न तत्व है।

जीवन की सता भिन्न है, परन्तु ये आत्मा के सहायक है। शरीर, इंद्रिया आदि सभी अनित्य है, आत्मा नित्य है। कर्म करने में जीव स्वतंत्र है, परन्तु कर्म का मूल्यांकन ईश्वर के अधीन है।

रामानुज के अनुसार जीव अणु परिणाम हैं। इस अणु परिणाम के कारण जीवात्मा सभी भौतिक शरीरों में प्रवेश करता है। शरीर अनेक है, अतः आत्मा भी अनेक है।

जीवन के मुख्य तीन प्रकार हैंः

1. **बद्ध जीवः** ये सांसारिक जीव है, जो सभी प्रकार के शरीरों में निवास करते है, इनकी सांसारिक यात्रा चलती है।
2. **मुक्त जीवः** भगवान की पूजा और प्रार्थना से जीव की सांसारिक यात्रा समाप्त हो जाती है, और स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर का विनाश हो जाता है। इसके बाद जीव दिव्य देह धारण कर बैकुण्ड में निवास करता है, अतः यह जीव का ईश्वर सान्निध्य प्राप्त रूप है। इस रूप में जीव ईश्वर के साथ रहता है।
3. **नित्य जीवः** ये कभी संसार में नहीं आते तथा ज्ञान कभी नष्ट नहीं होते, इन्हें भगवान का "परिकर" कहा जाता है।

जीवात्मा और परमात्मा का संबंध – रामाानुजाचार्य का मत विशिष्टाद्वैत कहलाता है। ये अद्वैत तो मानते हैं, परन्तु एक विशेष प्रकार का रामानुज का अद्वैत भेद सहित अभेद है।

रामानुजाचार्य के अनुसार जीव और ईश्वर का स्वरूप तो चेतन ही है दोनों का लक्षण "चैतन्य" है, परन्तु दोनों की चेतना एक समान नहीं। जीव अल्पज्ञ है और ईश्वर सर्वज्ञ है। अतः दोनों का स्वरूप ज्ञान होते हुए भी अल्पज्ञ और सर्वज्ञ का भेद अवश्य है। जीव का ज्ञान कभी ईश्वर के समान नहीं होता। जीव में अज्ञान है, माया के कारण वह सीमित है, ईश्वर सर्वज्ञ है।

जीवात्मा परमात्मा का शरीर है, परमात्मा शरीर है। आत्मा ब्रह्य का प्रकार है, ब्रह्य का प्रकार है, अतः दोनों में भेद है। इस प्रकार रामानुज के अनुसार जीवन और परमात्मा का संबंध भेद सहित अभेद है।

इनके अनुसार "तत्वमसि" "अहं ब्रह्यस्मि" आदि का अर्थ नितांत अभेद नहीं है। आत्मा ही जीवात्मा है। अविधा के उपाधि से संयुक्त आत्मा ही जीवात्मा है। वाचस्पति मिश्र का कथन है कि आत्मा और जीवात्मा में कोई अंतर नहीं है, परन्तु अनादि अविधा के कारण जब अहमतत्व का भाव उत्पन्न होता है, तो वह स्वयं को कर्ता, भोक्ता, ज्ञाता आदि रूपों में देखने लगता है, तो वह जीवात्मा होता है। तात्विक दृष्टि से शरीरादि में आत्मा अवश्य है, किन्तु वह उससे अलग है, पृथक है।

ऋग्वेद के अनुसार मनुष्य में एक अजन्मानिता अमरत्व हैं, जो शरीर जीवन मन और बुद्धि से भिन्न है। ये देह इन्द्रियाँ आदि आत्मा नहीं अपितु उसकी उपाधियाँ है। उसकी ब्राह्य अभिव्यक्तियाँ है।

आत्मा–तत्व का ज्ञान सहज नहीं क्योकि वह महान् से भी महान् और अणु से भी सूक्ष्म प्राणियों की हृदय गुहा में अन्तर्यामी के रूप् में उपस्थित रहता है। मनुष्य आत्म–तत्व को समझने में असमर्थ है, और भ्रमवश मन, बुद्धि और इन्द्रियों को ही सब कुछ समझ लेता है, किन्तु जब वह अन्तमुर्खी हो जाता है, तब वह परमात्मा की कृपा से आत्म दर्शन कर पता है।

इस प्रकार भारतीय तत्व चिंतन में आत्मा अज, नित्य एवं शाश्वत है, व्यापक और अजन्मा है। यह शरीरादि

से संबंधित होते हुए भी उससे भिन्न और पृथक है। डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में जिस प्रकार विश्व की प्रेरणा और हलचल के नीचे ब्रह्म शाश्वत् शक्ति है, उसी प्रकार व्यक्ति की चेतन शक्ति के नीचे मूलभूत सत्य, मानव आत्मा की अर्न्तमुखी आत्मा है। विचारों और प्रयत्नों के नीचे हमारे जीवन की चरम गहराई है। आत्मा जीव का अति सत्य है।

आत्मा का ज्ञातृत्व– रामानुज के अनुसार जीवात्मा एक नित्यचेतन द्रव्य है। ज्ञान ही इसका स्वरूप है। अतः इसे ज्ञाता कहते हैं। ज्ञान के कारण ही ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता कहलाता है। ज्ञान ही उसका धर्म है।

आत्मा का अणु तत्व– रामानुज के अनुसार जीव अणु परिणाम हैं। इस अणु परिणाम के कारण जीवात्मा सभी भौतिक शरीरों में प्रवेश करता है। वे वेदांतदीप ग्रन्थ में जीव के अणुरूप होने से शरीर के एक भाग में रहते हुए भी ज्ञान के शरीर के भिन्न भागों में उत्पति समझाने के लिए "दीपक की रश्मि" की उपमा देते हैं। जीव देह के एक भाग में ही रहता है और अपना प्रकाश शरीर के सारे भागों पर फैलता है, जैसे की एक दीप का जीव एक देशीय है। उसका स्वरूप अणु है, परन्तु अणु स्वरूप् होने पर भी तथा उसका निवास हृदय में ही होने पर भी उसे शरीर में होने वाली संवेदना का ज्ञान हो जाता है, ठीक उसी तरह जिस तरह चंदन को शरीर के किसी हिस्से में लगाने पर भी सम्पूर्ण शरीर में शीतलता की अनुभूति होती है। इस प्रकार आत्मा के चैतन्य से सम्पूर्ण शरीर में चेतना व्याप्त रहती है।

आत्मा का अंशत्व– अभेद दृष्टि से देखने पर जीव ब्रह्म का अंश है। जीव को ब्रह्म का अंश कहा गया है। रामानुज इसका स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार देह–देही का अंश है, उसी प्रकार जीव भी ईश्वर का अंश है।

"यथादेहिनो देव मनुष्यादि देहोशः तद्ववत"

अंश का अर्थ किसी वस्तु के पृथक देश में स्थित रहने से है। रामानुज कहते हैं कि जीव के बंधन का कारण उसका शरीर धारण करना है जो कि स्वयं कर्मो का परिणाम है। प्रश्न यह है कि स्वभाव से शुद्ध आत्मा कैसे कर्मो में आती है? रामानुज कहते हैं कि इस प्रश्न का उतर नहीं दिया जा सकता। कर्मो का आत्मा कर्मो से दूषित हुई? रामानुज के अनुसार जीव का बन्धन उस अर्थ में मिथ्या भी नहीं है, जिस अर्थ मे शंकर ने माना है।

प्रत्येक जीव को शुभ – शुभ कर्मो का फल भोगने के लिए आवागमन के चक्र में प्रवेश करना ही पड़ता है, क्योंकि संसार में कारण–कार्य संबंध अमिट है, जैसा कारण होगा वैसा कार्य होगा। कार्यरूप् फल कारण रूप कर्म के संबंध से है। ऐसा मानने से परमात्मा में वैषम्य और जैघृणादोष नहीं आता है।

व्यास सूत्र इसी मत का प्रतिपादन करते हैं।"वैषया नैघृष्टों न सापेक्षत्वात्"। जीव के अनादि होने से उसका बंधन भी अनादि मानना होगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार रामानुज के अनुसार जीवात्मा नित्य चेतन द्रव्य है। आत्मज्ञान के कारण ही ज्ञाता करता और भोक्ता कहलाता है। जीव ब्रह्मा का अंश है, रामानुज के अनुसार अच्छे कर्म करने के लिए और कर्मों के फल को भोगने के लिए आवागमन के चक्कर में पड़ना ही पड़ता है, क्योंकि जैसा कारण होगा वैसा कार्य होगा। इस प्रकार आत्मा के चैतन्य होने से संपूर्ण शरीर में चेतनता विद्यमान रहती है। भारतीय तत्व चिंतन में आत्मा अज, नित्य एवं शाश्वत है।

संदर्भ सूची

1. श्री भाष्य, *ज्ञातृत्वमेव जीवात्मास्वरूप–1,* 2–3–31।
2. राधाकृष्णन, *उपनिषद् की भूमिका,* पृ. 75।
3. गुप्ता सुरेन्द्र दास, *भारतीय दर्शन भाग–3,* पृ. 148।
4. श्री भाष्य–2–3–25।

****